हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

का औचित्य

डॉ॰ सविता — अनुप्रिया पाठक

B.A. Part II Hindi Hons.

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा दोनों का ही परिष्कार किया। अब तक हिंदी साहित्य में काव्य की ही प्रधानता थी और इस भाषा में गद्य के अनुरूप संशोधन एवं अभिव्यक्ति क्षमता का अभाव था। गद्य साहित्य के इतिहास में आने के बाद भी काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही थी। जिसमें यह स्थिति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की थी कि गद्य तो खड़ी बोली में लिखा जाय और काव्य ब्रजभाषा में। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सामने भाषा की एकरूपता की बहुत ही महत्वपूर्ण चुनौती थी। भाषा की समस्या की पूर्व पीठिका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इनके पूर्व ही बना दी थी किंतु काव्यभाषा के रूप में इन्होंने भी ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया था। इसके कारण भी भाषा की [illegible] उनके लोग बढ़ गये थे। रीतिकालीन साहित्य में काम का चित्रण बहुत होता था। आचार्य द्विवेदी अपने व्यक्तिगत जीवन में कठोर अनुशासन के पक्षधर थे। इसी अनुशासन का विधान इन्होंने साहित्य में भी अपनाया। रीतिकालीन साहित्य श्रृंगार, कामुक एवं विकृत मनोवृत्ति की देन थी। उसका समाज एवं परिवार के लिए अनुकूल नहीं था। इसलिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य के [illegible] को बिल्कुल ही बदल दिया। यही कारण है कि इस काल में राष्ट्रप्रेम, अतीत का गुणगान, नीति और उपदेश

काव्य के उपजीव्य बन गये। इसी प्रकार गद्य में भी आचार्य द्विवेदी के निर्देश पर ही साहित्य का विषय निर्धारित होता था। कि द्विवेदी जी ने एक निबंध लिखा था- 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' - जो सरस्वती पत्रिका में छपा था। इसमें उन्होंने साहित्यकारों को अपनी लेखनी चलाने के लिए एक विषय सुझाया था। इसीसे प्रेरित होकर मैथिली शरण गुप्त ने 'साकेत' की रचना की थी। इस काव्य की नायिका उर्मिला को बनाया गया था। कालान्तर में इसी पृष्ठभूमि पर आधारित 'यशोधरा' की रचना हुयी जिसकी नायिका भगवान बुद्ध की पत्नी यशोधरा को बनाया गया था। दोनों काव्यों में पात्र एवं स्थान भिन्न-भिन्न हैं किन्तु परिस्थितियां प्रायः एक सी ही है - पति का प्रवासी हो जाना। गद्य साहित्य का भी यही हाल था। द्विवेदी जी ऐसे कर्मठ साहित्यकार थे कि सरस्वती पत्रिका में भिन्न-भिन्न नामों से स्वयं ही निबंध लिखते थे। इस प्रकार इनके निबंधों की संख्या बड़ी होती गयी। यही कारण है कि इन्हें हिन्दी निबंध साहित्य का जॉनसन कहा जाने लगा था। डॉ॰ जॉनसन अंग्रेजी साहित्य के अत्यन्त उत्कृष्ट निबंधकार थे। इस प्रकार आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी भाषा का भी नियमन किया, व्याकरण सम्मत बनाने का बहुत प्रयास किया। इस रूप में उन्होंने हिन्दी भाषा का बड़ा उपकार किया। बेधड़क कलम पर नियंत्रण करके हिन्दी साहित्य को चरम सीमा में पहुंचा दिया। अब साहित्य के पठन-पाठन में एक दूसरे से आखें चुराने की आवश्यकता नहीं रह गयी थी। साहित्य स्वतः नैतिक एवं समाज के अनुकूल हो गया था।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि संवत 1700 से साहित्य की दशा एवं दिशा सर्वथा परिवर्तित हो गयी थी। राजनैतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक स्थितियों में आये परिवर्तन से साहित्य कितना प्रभावित हो सकता है, यह हिन्दी साहित्य को देखने से स्पष्ट हो जाता है।